Mob No 9934683027
Date 31.07.2020
Dr Tapati Mukerjee
Associate Prof.
Music Dept.
H.O.D.
R.M. College Sas.

Theory of Sandhi Prakash Raag

B.A Part II (Hons) Paper 3rd Theory.

(1) सन्धि प्रकाश राग का सिद्धान्त

हिन्दुस्तानी संगीत में रागों का समय निर्धारित करने के लिए दूसरा नियम सन्धि प्रकाश। इस नियम के अनुसार रागों को तीन भाग में विभक्त किया गया है। सन्धि प्रकाश राग में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल प्रयोग होता है।

जो राग दिन तथा रात के संधि बेला में गाया बजाया जाता है उसे संधि प्रकाश राग कहा गया है। सन्धि प्रकाश का समय सुबह और शाम चार (4) बजे से सात (7) बजे तक माना जाता है। इन रागों की यह विशेषता होती है उसमें रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल प्रयोग होता है। जैसे राग —— भैरव कालिंगड़ा, रामकली विभास, परज आदि प्रातःकालीन सन्धि प्रकाश राग है। इसके विपरीत राग पूर्वी, पूरिया धनाश्री, श्री इत्यादि शाम के संधि प्रकाश राग है।

राग मारवा को भी सन्धि प्रकाश राग माना जाता है क्योंकि यह राग शाम के संधि बेला में गाया जाता है। इस राग में रिषभ स्वर कोमल प्रयोग होता है लेकिन धैवत स्वर शुद्ध प्रयोग किया जाता है। संधि प्रकाश रागों में गान्धार स्वर हमेशा शुद्ध प्रयोग किया जाता है, धैवत स्वर कोमल एवं शुद्ध भी।

अब हम यह कह सकते हैं कि संधि प्रकाश रागों में रिषभ स्वर कोमल होना चाहिए तथा गान्धार स्वर शुद्ध होना आवश्यक है।

संधि प्रकाश रागों में रिषभ स्वर वर्जित नहीं होता

1. क्योंकि इन स्वर पर रागों का वर्गीकरण होता है।
भैरव, पूर्वी तथा मारवा थाट के राग संधि-
प्रकाश रागों के अन्तर्गत आते हैं। उदाहरणस्वरूप-
प्रातःकालीन संधि-प्रकाश राग ललित, राग भैरव, रामकली
आदि तथा सायंकालीन संधि प्रकाश राग पूर्वी, मारवा
पूरियाधनाश्री पूरिया एवं श्री आदि।

---

(2).